SUMMARY OF TWO GENTLEMEN OF VERONA IN HINDI

- A.J. Cronin

सारांश

जब लेखक अपने साथी के साथ, वेरोना नगर के समीप गाड़ी में जा रहे थे तब उन्हें दो लड़कों ने रोका। लड़के फटे-पुराने वस्त्र पहने हुए थे और स्ट्रॉबरीज़ बेच रहे थे। लेखक के ड्राइवर ने उन्हें सावधान किया और फल खरीदने से मना किया। दोनों बालक अत्यन्त दुबले-पतले थे, परन्तु उनकी आँखें निष्कपट थी और अपनी ओर आकर्षित करती थीं। लेखक के साथी ने पता लगाया कि दोनों में से बड़ा लड़का तेरह वर्ष का था और उसका नाम निकोला था; छोटा लड़का केवल बारह वर्ष का था और उसका नाम जकोपो था। लेखक को वह बहुत आकर्षक लगा और उन्होंने स्ट्रॉबरीज़ की सभी टोकरियाँ खरीद लीं। दूसरे दिन, प्रात:काल लेखक ने उन दोनों को लोगों के जूते पालिश करते देखा। वे अपना काम बड़ी अच्छी तरह कर रहे थे। लड .कों ने मुस्करा कर लेखक को बताया कि वह और भी अनेक प्रकार के काम

करते हैं, जैसे वह पर्यटकों को जूलियट की कब्र तक ले जाते हैं। लेखक बहुत ही प्रभावित हुए और उन्हें तुरन्त अपने पास काम पर रख लिया। उनके सम्पर्क में रहकर लेखक को यह आभास हुआ कि दोनों लड़के निष्कपट और अत्यन्त स्नेही थे। पर उनके हँसमुख चेहरों के पीछे एक गंभीरता और उदासी छिपी हुई थी। परन्तु लेखक को अपने निर्णय पर कोई खेद नहीं हुआ, क्योंकि वह दोनों बहुत ही चतुर और सूझ-बूझ वाले थे। उनकी कार्यपरायणता अद्‌भुत थी। लेखक तब आश्चर्यचकित रह गये जब उन्होंने उन दोनों को देर रात एक ठंडी हवा से भरी, सुनसान गली में अर्धनिद्रा में पाया। वह दोनों अखबार बेचने के लिए आखिरी बस का इंतजार कर रहे थे। उनके अधिक से अधिक काम करने के उत्साह से लेखक प्रभावित तो हुए, परन्तु उन्हे आश्चर्य हुआ कि अथक परिश्रम के पश्चात भी वे फटे-पुराने कपड़े पहने हुए थे और शायद ही कभी कुछ खाते थे। लेखक की यात्रा समाप्त होने वाली थी। जाने से पहले उन्होंने लड़कों से पूछा कि वह उनके लिए कुछ कर सकते हैं। बड़े निकोला ने तो मना कर दिया, परन्तु छोटे ने कहा कि वह कल, तीस मील दूर उन्हें पोलेटा ले जाएँ। लेखक असमंजस में पड़ गये। उन्होंने अपने ड्राइवर को कल की छुट्टी दे दी थी। अन्त में सद्‌भावना के लिए उन्होंने खुद उन दोनों को ले जाने का निश्चय किया।

दूसरे दिन, दुपहर में वह एक छोटे से गाँव पहुँचे जो एक पहाड़ी के निकट था। लेखक के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब वह एक बड़े भव्य घर के सामने रुके। इससे पहले वह कुछ पूछते, दोनों लड़के कूद कर उतर गये और लेखक से एक घन्टे बाद उसी जगह पर उन्हें लेने आने को कहा।

लेखक अपनी जिज्ञासा को रोक न सके और उनके पीछे चल पड़े। एक नर्स ने उनका स्वागत किया और वह उन्हें अन्दर ले गयी। शीशे के विभाजन से उन्होंने देखा कि लड़के अस्पताल के एक पलंग के

पास बैठे थे जिस पर एक बीस वर्षीय लड़की लेटी हुई थी लड़की उन दोनों की बहिन लग रही थी। लेखक ने स्वयं उनके पास जाने से रोका। वह एक परिवार मिलन में अनामंत्रित प्रवेश नहीं करना चाहते थे।

नर्स ने पूछने पर उन्हें बताया कि बच्चों के पिता युद्ध में मारे गये थे, और एक बम ने उनके घर को नष्ट करके उन्हें गृहहीन कर दिया था। इन बच्चों ने अपने घर के अवशेषों से अपने लिए जीने का आश्रय बनाया था। कई वर्षों तक जर्मनी का आधिपत्य वेरोना में बना रहा और बच्चों को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा। उनकी बहिन, लूशिया, जो एक गायिका बनना चाहती थी, भूख और शीत के कारण रीढ़ की हड्डी के तपेदिक का शिकार हो गई। दोनों लड़के लूशिया को इस अस्पताल में ले आये और उसकी सेवा सुश्रूषा के लिए हर हफ्ते पैसे लेकर आते रहे। युद्ध के कारण काम की कमी थी, फिर भी दोनों पैसे देने में कभी भी नहीं चूके। अब लूशिया पहले से बहुत अच्छी है और शीघ्र ही चलने और गाने लगेगी।

लड़के बाहर आये और लेखक उन्हें शहर वापस ले आये। लड़के रास्ते में एक शब्द नहीं बोले और न लेखक ने ही उनसे कुछ पूछा। वह उनकी गोपनीयता का सम्मान रखना चाहते थे। उन दोनों बालकों के साहस, कड़े परिश्रम, किसी भी रुकावट के आगे न झुकने की हिम्मत ने लेखक के हृदय में उनके प्रति श्रद्धा भर दी और वह यही भावना लिए वहाँ से चले गये।